B.A. I Hindi Hons.



प्राध्यापक- डॉ॰ सतीश चन्द्र पाठक
एस०एस० कॉलेज, जहानाबाद

## 'हंस का नीर-क्षीर विवेक' निबंध एक अध्ययन।

उत्तर :- आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी हिन्दी साहित्य के युग-निर्माता एवं कुशल आचार्य थे। यद्यपि उन्होंने रेलवे में नौकरी को अपनी आजीविका का साधन बनाया किन्तु अपने स्वाभिमान एवं ईमानदारी के कारण वे उस सेवा में टिक न सके और उससे त्यागपत्र देकर हिन्दी भाषा एवं साहित्य की सेवा में लग गये। 'सरस्वती' पत्रिका के संपादक के रूप में उन्होंने हिन्दी भाषा में उपस्थित अराजकता को दूर कर साहित्य जगत को भी अनुशासित किया। इसके परिणाम स्वरूप साहित्य के नाम पर प्रकाशित होने वाले अनपेक्षित एवं समाजहित के प्रतिकूल विषयों पर प्रभावी अंकुश लगा सका जो उस युग की बड़ी आवश्यकता थी। आ० द्विवेदी प्रख्यात निबंधकार थे इसके माध्यम से उन्होंने न केवल हिन्दी साहित्य को समृद्धि प्रदान की वरन साहित्यकारों को भी मार्ग निर्देश कर सार्थक लेखन के लिए प्रेरित किया।

'हंस का नीर-क्षीर विवेक' निबंध में निबंधकार ने हंस के सन्दर्भ में साहित्य में उपलब्ध कवि-समय की परीक्षा का प्रयास किया है। संपूर्ण भारतीय साहित्य में अनेक कवि-समयों की प्रसिद्धि है, यथा हंस का मोती चुगना, हंस का पानी मिले दूध को अलग कर दूध पी लेना और पानी को छोड़ देना, भौंरों का चम्पा के फूल पर नहीं मंडराना, कमल का सूर्य की उपस्थिति में ही खिलना इत्यादि। इनमें से यहां हंस के नीर-क्षीर विवेक की विस्तृत परीक्षा की गयी है।

संस्कृत साहित्य अत्यंत समृद्ध है। अनेक साहित्यकार विश्वस्तरीय प्रसिद्धि पा चुके हैं।

कालीदास, भारवि, कल्हण ऐसे ही प्रसिद्ध कवि हैं। संपूर्ण संस्कृत साहित्य में हंस के इस किंवदंति का यथेष्ट प्रयोग हुआ है। भामिनीविलासकार इस सन्दर्भ में कहते हैं - "हे हंस, यदि नीर को क्षीर से अलग कर देने का विवेक तू ही शिथिल कर देगा तो फिर इस जगत में कुलव्रत का पालन कौन करेगा?"

इसी प्रकार अभिज्ञान शाकुंतलम् में कालिदास ने लिखा है - " हंस जिस तरह क्षीर ग्रहण कर लेता है, उसमें मिला हुआ पानी पड़ा रहने देता है वैसे ही यह वध करने योग्य मुझे मारेगा और रक्षणीय द्विज की रक्षा करेगा। संस्कृत का साहित्य हंस की इस विरुदावली से भरा पड़ा है। वैसे ही हिंदी साहित्य में भी गोस्वामी तुलसीदास ने भी - "हंस पय लिहि परिहरि वारि विकार" कहकर इस कथन की सत्यता पर मुहर लगा दी है। यही क्यों आदिकाल से आधुनिक साहित्य तथा बोलचाल में भी हंस के गुणों की चर्चा और उद्धरण की शोभा देखते ही बनती है।

निबंधकार की प्रतिपत्ति है कि हंस के नीर-क्षीर विवेक की चर्चा तो बहुत है किन्तु क्या इसकी परीक्षा भी हुई कि इस कथन में कितनी सच्चाई है। हंस के इन गुणों की प्रसिद्धि जब अमेरिका पहुंची तो वैज्ञानिकों को बड़ा आश्चर्य हुआ कि भला हंस में ऐसी क्या खूबी है कि वे दूध और पानी को अलग कर देते हैं? उन्होंने हंस पाले और फिर प्रयोग किया और पाया कि इस कथन में कोई सच्चाई नहीं है। प्रयोग में एक बात जरूर सामने आयी कि हंस जब कुछ खाते हैं तो रस वाला भाग उनके मुख के द्वार के रूप में

बाहर निकाला है और जो शेष पदार्थ है वह अन्दर चला जाता है। किन्तु इस शेष पदार्थ का कार्य तो दूध नहीं हो सकता है। अतः नीर-क्षीर विवेक का कथन सत्य की कसौटी पर खरा नहीं उतरता।